जनजातीय समाज और भाषा विकास में संचार साधनों का प्रभाव

मंयक भार्गव, शोधार्थी (पत्रकारिता और जनसंचार)
डॉ के. के. सिंह, शोध पर्यवेक्षक
सेम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, भोपाल (मप्र)

शोध सारांश

आज के आधुनिक युग में संचार के कई रूप है। सचार कांति के दो प्रमुख रूप है जिन्होनें समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। इसमें प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया। प्रिंट मीडिया में प्रमुख समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पाम्प्लेटस, पोस्टर और हॉडिंग सम्मिलित है, वहीं इलेक्ट्रानिक मीडिया के रूप में टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल, सोशल नेटवर्किंग, ई-कॉमर्स, ई-मेल आदि अनेक साधन शामिल है। संचार काति के विभिन्न साधन सूचनाओ और नवीन जानकारियों को व्यवस्थित रूप से एकत्रीकरण, विश्लेषण, संग्रहण तथा एक-दूसरों से शेयर करने का एक तंत्र है। राष्ट्रीय स्तर के हिंदी-अंगरेजी के प्रमुख समाचार-पत्रों के कवरेज का विश्लेषण किया जाए, तो नब्बे के दशक के बाद आदिवासियों से संबंधित खबरें या फीचर बहुत कम देखने को मिलते हैं। अब तक गिनी-चुनी पत्रिकाओं के आदिवासी विशेषांक आए हैं। इस पक्ष पर भी चर्चा होनी चाहिए कि मुख्यधारा मीडिया में पत्रकारिता, अभिनय, प्रबंधन आदि में आदिवासी समुदाय के कितने लोग जुड़े हैं? उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि इक्के-दुक्के को छोड़ कर इनका प्रतिनिधित्व नगण्य है। आदिवासी जीवन से जुड़ी विषय-वस्तु के विभिन्न पक्षों के सवालों, समस्याओं, उनके समाधानों के भीतर प्रवेश के लिए जरूरी है कि जो लोग आदिवासी जीवन से सीधे-सीधे जुड़े हुए हैं उनका सहयोग प्रतिनिधित्व के स्तर पर लिया जाए तो आदिवासी जीवन की वास्तविकता काफी हद तक सामने आ सकेगी। यह इसलिए कि आदिवासी लोक भारतीय समाज का एकमात्र तबका है, जो अलग-थलग पड़ा हुआ है और शेष समाज से अभी तक अपेक्षित स्तर पर नहीं जुड़ पाया है। किसी भी समाज को अपने विकास और समृध्दि के लिए सूचनाओं के व्यवस्थित तंत्र की अत्यत आवश्यकता होती है, क्योंकि समाज की प्रत्येक योजनाओं का आधार यही सूचनाएँ होती है और ये सूचनाएँ जितनी सटीक और अल्प समय में समाज के लोगों में प्रसारित होगी, योजनाओं के सफल होने तथा समाज के विकासषील होने की सम्भावनाएँ उतनी ही बढ़ जाती है। आदिवासी क्षेत्रों में मोबाइल और सोशल मीडिया का तेजी से प्रयोग किया जा रहा है। अब आदिवासी भी प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर चल रही गतिविधियों की चर्चा करते है। संचार के साधनों के प्रभाव के रूप में लोगों के दैनिक जीवनशैली में गुणोत्तर वृध्दि हुई है।

की वर्ड- एकत्रीकरण, विश्लेषण, संग्रहण, सोशल मीडिया, आदिवासी जीवन, क्षेत्र, राष्ट्रीय स्तर आदि।

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से लेकर आज तब जनजातियों ने अपनी संस्कृति परम्पराओं, रीतियों को बहुत अच्छे से संजोकर रखा है, किन्तु आज आवश्यकता है तो उनके बहुमुखी विकास की। आज हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं फिर भी वहीं कुछ स्थान ऐसे है जहाँ आज भी ज्ञान रूपी रोशनी नहीं पहुँची है। हमारा देश विविधताओं वाला देश है। यहाँ विभिन्न वर्ग एवं जातियों के लोग निवास करते हैं। इनमें जनजाति वर्ग भी सम्मिलित है जो हमारे देश की जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा है। जनजाति वर्ग के लिए आदिवासी शब्द का योग किया जाता है। यह दो शब्दों आदि और वासी से मिलकर बना है जिसका अर्थ है मूल निवासी। पुरातनलेखों में आदिवासियों को अत्विका और वनवासी भी कहा गया है। देशज, मूलनिवासी, जनजाति, गिरिजन आदि भी जनजाति के पर्याय है।

सदियों से पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले इन लोगों की अपनी संस्कृति, भाषा, वेशभूषा, परम्पराएँ, रीति-रिवाज है। इनकी अपनी धार्मिक परम्पराएँ हैं. जिनका ये आज भी पूर्ण आस्था एवं विश्वास के साथ निर्वहन करते हैं। आदिवासियों के बारे में कहा जाता है, कि

'आदिवासियों की दृष्टि समतामूलक है और उनके समुदायों में व्यक्ति केन्द्रित और शक्ति संरचना के किसी भी रूप का कोई स्थान नहीं है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के लिये निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये है, जो इस प्रकार से है।

1-जनजातीय समाज में संचार अभिरूचियों का अध्ययन करना।

2-संचार माध्यमों के आदिवासियों की उपयोगिता का अध्ययन करना।

3-भाषा विकास में संचार माध्यमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण विवरणात्मक शोध प्रविधि से पूरा किया गया है। अध्ययन के लिये प्राथमिक और द्रितीयक ऑकड़ों को संकलित कर उनका वर्गीकरण, सारणीयन और विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध अध्ययन मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में किया गया है। बैतूल जिले में रहने वाले आदिवासी गौड़ी भाषा का प्रयोग करते है। भारत की हृदय स्थली में स्थित बैतूल जिला परित्र ताप्ती नदी के उद्गम स्थल का गौरव प्राप्त किये हुए है। दिल्ली मद्रास मुख्य लाईन पर भोपाल नागपुर के मध्य में स्थित है। अकबर महान के नौ रत्नों में से एक रत्न टोडरमल के द्वारा कराये गये सर्वेक्षण से ज्ञात अखंड भारत के केन्द्र बिन्दु पर बसा यह जिला आदिवासी संस्कृति को उद्घाटित करता है।आदिवासी बाहुल्य जिला बैतूल के दक्षिण में सतपुडा की श्रृंखलाओं में

फैला हुआ है। उत्तर में नर्मदा की घाटी और दक्षिण में बरार का मैदार है। यह जिला 21"22′ से 22"23′ उत्तरी अक्षांश एवं 77"-10′ से 78"-33′ देशांश के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में होशंगाबाद जिला, दक्षिण में महाराष्ट्र प्रदेश का अमरावती जिला, पूर्व में छिंदवाडा जिला और पश्चिम में पूर्व निमाड (खण्डवा) जिला है। बैतूल जिला सतपुड़ा की पर्वत श्रृंखलाओं में समुद्र सतह से 365 मीटर और इससे अधिक उंचाई पर बसा हुआ है। पर्वत श्रृंखला पूर्व की ओर अधिक उंची है। जो पश्चिम की ओर कम होती जाती है। औसत उंचाई 653 मीटर उंची है। चार भागों में विभाजित श्रृंखलाएं (1) सतपुडा पर्वत श्रृंखला (2) तवा मोरण्ड घाटी (3) सतपुडा पठार के बीच में (4) ताप्ती की घाटी है।

उत्तरदाताओं का चयन

प्रस्तुत अध्ययन के लिये मध्यप्रदेश के बैतूल जिले से 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। उत्तरदाताओं का चयन आदिवासी क्षेत्रों से किया गया है। इसके अलावा अध्ययन के लिये चयनित सभी उत्तरदाता जनजातीय वर्ग के है।

परिणाम और विश्लेषण

1-उत्तरदाताओं के बीच में संचार माध्यमों की उपलब्धता का अध्ययन

तालिका क्रमांक-01

संचार माध्यम	उत्तरदाताओं की संख्या	आवृत्ति
समाचार पत्र	05	10 फीसदी
टेलीविजन	10	20 फीसदी
रेडियो	7	14 फीसदी
मोबाइल (सोशल मीडिया)	28	54 फीसदी
कुल	50	100 फीसदी

रेखाचित्र क्रमांक-01

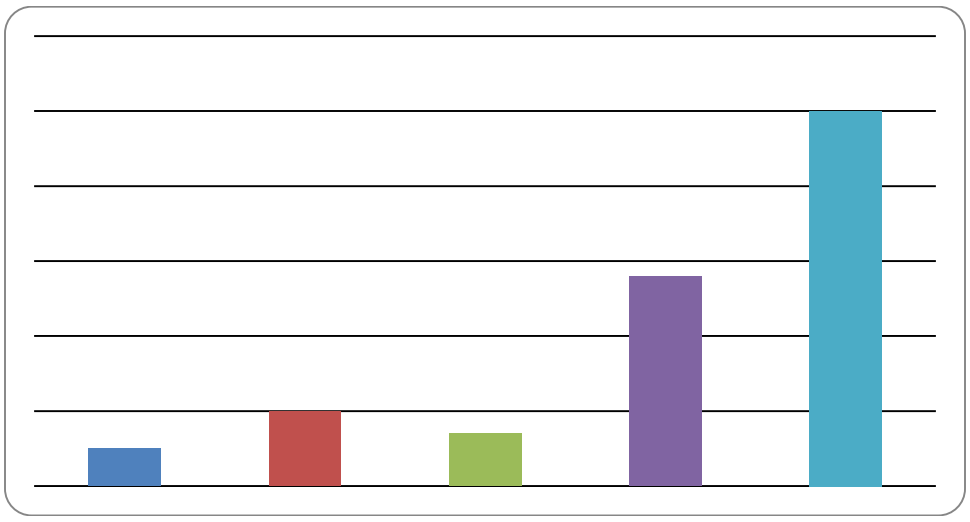

विश्लेषण- प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है, कि जनजातीय क्षेत्रों में संचार माध्यमों में सबसे ज्यादा मोबाइल की उपलब्धता है। जिसमें सोशल मीडिया के जरिये या न्यूज चैनलों के जरिये सभी प्रकार की सूचनाओं, सामाजिक और राजनैतिक जानकारियां प्राप्त हो जाती है। सोशल मीडिया की तुलना में समाचार पत्र या पत्रिकाओं की जनजातीय क्षेत्र में उपलब्धता कम है।

2-जनजातीय वर्ग में संचार माध्यमों के कारण सामाजिक सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

तालिका क्रमांक-02

संचार माध्यम	उत्तरदाताओं की संख्या	आवृत्ति
खानपान (संतुलित आहार)	08	18 फीसदी
पहनावा	10	20 फीसदी
सामाजिक कार्यक्रम	7	14 फीसदी
भौतिक संसाधान	28	54 फीसदी
कुल	50	100 फीसदी

रेखाचित्र क्रमांक-02

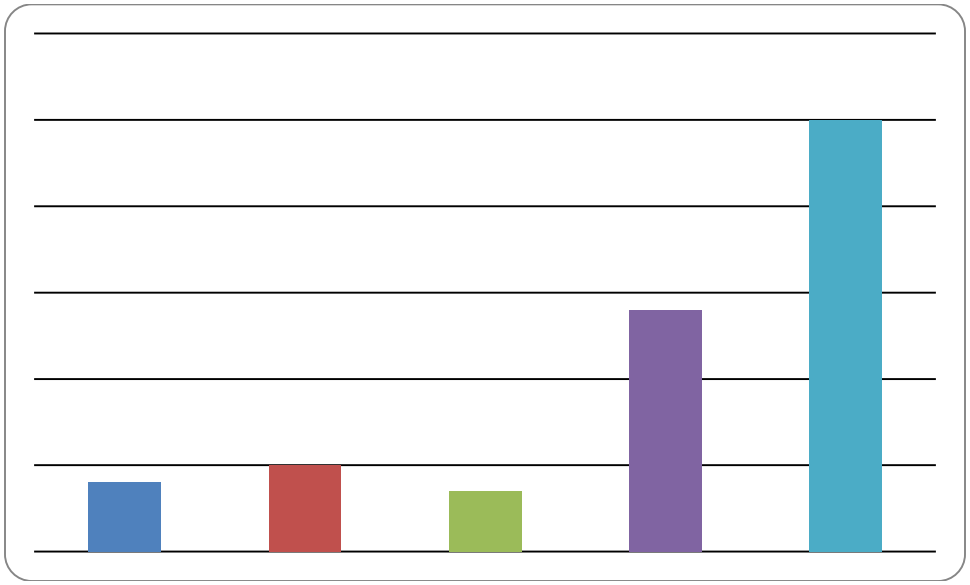

विश्लेषण-प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है, कि जनजातीय वर्ग में संचार माध्यमों के कारण सामाजिक सकारात्मक प्रभाव देखा गया है। सबसे ज्यादा जनजातीय वर्ग में भौतिक संसाधान के प्रति ज्यादा उत्सुकता बढ़ी है। इसके अलावा पहनावा और खानपान में भी परिवर्तन संचार माध्यमों के कारण हो रहा है।

3-जनजातीय वर्ग में संचार माध्यमों के कारण राजनैतिक और आर्थिक सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

तालिका क्रमांक-03

संचार माध्यम	उत्तरदाताओं की संख्या	आवृत्ति
स्थानीय मुद्दों की जानकारी	10	20 फीसदी
प्रदेश की योजनाओं की जानकारी	8	16 फीसदी
राष्ट्रीय स्तर की योजनाओं की जानकारी	7	14 फीसदी
राजनीतिक ज्ञान	25	50 फीसदी
कुल	50	100 फीसदी

रेखाचित्र क्रमांक-03

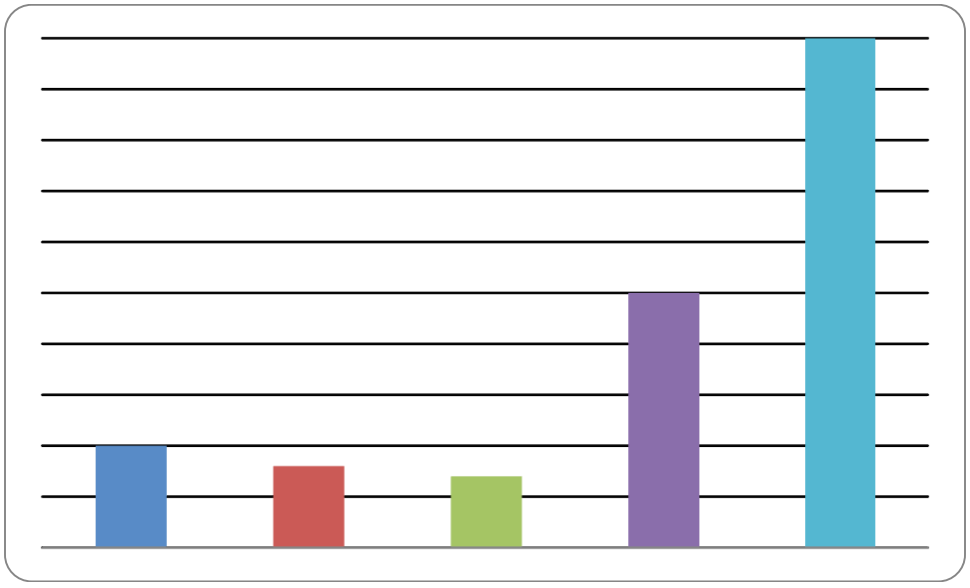

विश्लेषण-प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है, कि संचार माध्यमों के कारण राजनीति का ज्ञान जनजातियों के बीच में बढ़ रहा है। उनको संचार माध्यमों के कारण प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर की योजनाओं की जानकारी प्राप्त हो रही है।

4-जनजातीय वर्ग में संचार माध्यमों के कारण नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

तालिका क्रमांक-04

संचार माध्यम	उत्तरदाताओं की संख्या	आवृत्ति
दिनचर्या प्रभावित	05	10 फीसदी
कार्य प्रभावित	8	16 फीसदी
व्यसन	7	14 फीसदी
आर्थिक बोझ	25	50 फीसदी
अश्लीलता	05	10 फीसदी
कुल	50	100 फीसदी

रेखाचित्र क्रमांक-04

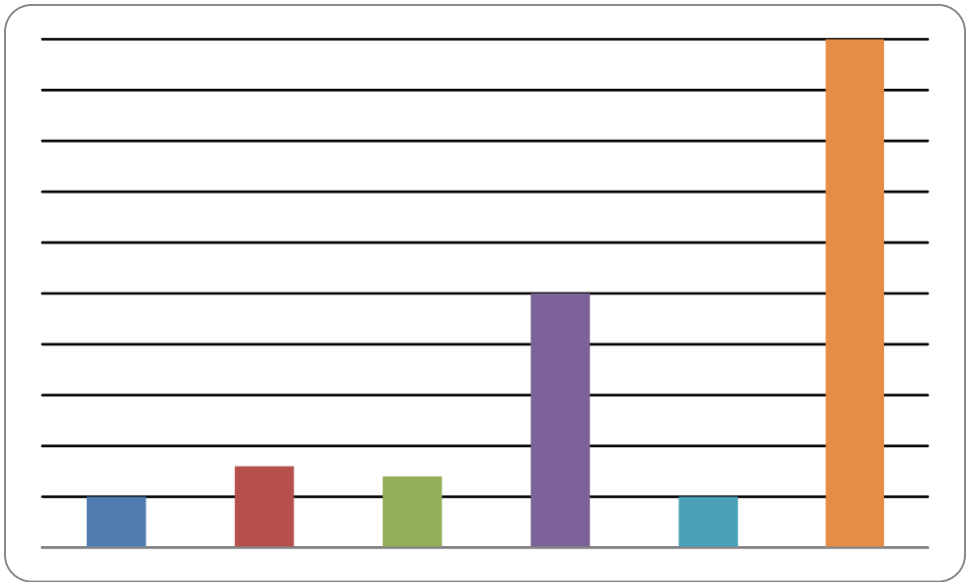

विश्लेषण-प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है, कि संचार माध्यमों के कारण जनजातीय वर्ग में नकारात्मक प्रभाव भी देखे जा रहे है। जनजातीय वर्ग के युवाओं की दिनचर्या प्रभावित हो रहे है। इसके अलावा संचार माध्यमों के उपयोग का आर्थिक बोझ भी युवाओं पर सबसे ज्यादा बढ़ रहा है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है, कि मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के जनजातीय वर्ग में संचार माध्यमों का व्यापक प्रभाव देखा गया है। बढ़ी संख्या में जनजातीय वर्ग के लोग संचार के विभिन्न माध्यमों का उपयोग कर रहे है। इतना ही नहीं सकारात्मक के साथ ही उनमें नकारात्मक प्रभाव भी संचार माध्यमों का बढ़ा है। संचार माध्यमों के कारण जहां जनजातीय वर्ग को स्थानीय मुद्दो, स्थानीय राजनीति की जानकारी प्राप्त हो रही है। विभिन्न संचालित योजनाओं की

जानकारी भी प्राप्त हो रही है। वही जनजातीय वर्ग के खासकर युवा सोसळ मीडिया के उपयोग के कारण आलसी भी हो रहे है। वे भौतिक संसाधनों की ओर आकर्षित हो रहे है और अपना काफी समय सिर्फ सोशल मीडिया में बर्बाद कर रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1-भारद्वाज, नंद (2007)- जनसंचार संस्कृति एवं बाजार नई दिल्ली-सामयिक ।

2-डेविस, किंग्सले (1949)- हयूमन सोसायटी, मेकमिलन पब्लिकेषन न्यूयार्क।

3-ढाकरिया, दिनेश कुमार, (2014)- भारिया जनजातियों में विकास योजनाओं का प्रभाव एक-मूल्यांकनात्मक अध्ययन (छिन्दवाडा जिले के विषेष संदर्भ में) (अप्रकाषित शोध प्रबंध) ।

4-दीक्षित ध्रुव कुमार (2000)- पातालकोट घाटीः भौगोलिक एवं जनसंख्यात्मक विवेचन म.प्र.हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

5-डॉ. सुदास शोभा, (2009) सूचना कांति और भारतीय समाज, सनावद ।

6-जेन्सन एम.डी, इन्ट्रोडक्शन टू सोशल प्राब्लम्स ।

7-लोधा मनोज (2012-13)- कम्युनिकेषन एण्ड ट्रायबल डेवलपमेंट, क्लासिकल पब्लिकेशन दिल्ली।

8-पंत, एन सी (2005)- मीडिया लेखन के सिद्यांत नई दिल्ली-तक्षशिला।

9-श्रीनिवास, एम.एन. (2009) - आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

10-सिंह, ओमप्रकाश (2004) संचार और पत्रकारिता के विविध आयाम ।

11-ठाकुर देवेन्द्र, ठाकुर डी.एन. (2009) ट्रायबल डेवलपमेंट एण्ड प्लानिंग, दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन दिल्ली।